'कामयाबी का कोई शॉर्टकट नहीं'

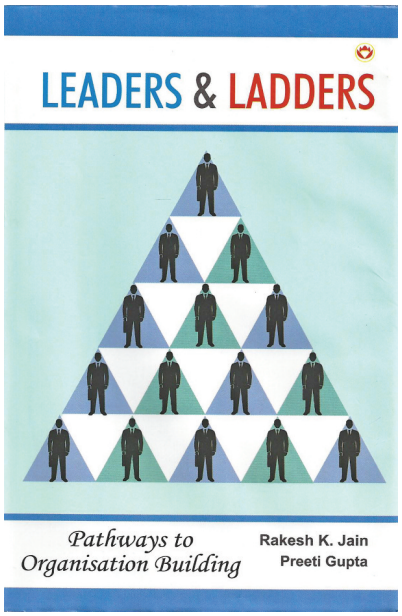

किताबः लीडर्स ऐंड लैडर्स
लेखकः राकेश जैन/प्रीति गुप्ता
मूल्यः 500 रुपए
प्रकाशकः डायमंड पॉकेट बुक्स

जब अर्थव्यवस्था में खास तेजी न दिख रही हो, जब वैश्विक और देसी कारोबारी माहौल में एक किस्म की मायूसी हो, स्थापित कारोबार भी तंगी महसूस कर रहे हों, जब कर्ज का बोझ बढ़ रहा हो, ऐसे में अगर कोई किताब कारोबारी नेतृत्व कला और सफलता के मंत्र लेकर आए तो जाहिर है, उसका डूबते को तिनके का सहारा की तरह स्वागत होगा। ऐसा ही एक उपहार एफएसएल समूह के चेयरमैन **राकेश जैन** 'लीडर्स ऐंड लैडर्स' के रूप में लेकर आए हैं। दिल्ली के मशहूर श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से एमए और 1979 बैच के चार्टर्ड एकाउंटेंट के पास 35 साल का वित्त बाजार, कराधान, कंपनियों के विलय, साफ्टवेअर और वेल्थ मैनेजमेंट जैसे विविध क्षेत्रों में अनुभव का विशाल भंडार है। लगातार नए ज्ञान को आत्मसात करने की व्यावहारिकता और विनम्रता ने ही उन्हें इस सफल मुकाम पर पहुंचाया है। एक सरकारी अधिकारी के इस बेटे की शुरुआती पढ़ाई भी सरकारी स्कूल में हुई लेकिन अपनी लगन, मेहनत और प्रतिभा के बूते वे सफलता की सीढ़ियां चढ़ते गए। उनकी किताब उनकी कामयाबी की दास्तां तो है ही, युवा उद्यमियों और नौजवानों को बुनियादी सीख भी प्रदान करती है, जिसके सहारे मुश्किल दौर में वे कामयाबी की सीढ़ियां चढ़ सकते हैं। बाजार में नई किताब आने के बाद **शाहमीर** की उनसे खास बातचीत के संपादित अंश।

आपको यह किताब लिखने की प्रेरणा कहां से मिली?
किताब लिखने का विचार तब आया, जब मैं अपनी प्रशिक्षण सामग्री और विचारों के नोट देख रहा था। कई साल से हमारा फर्म प्रबंधन के विचारों का लिखित दस्तावेज तैयार करने में लगा है। इसके साथ मेरी भी आदत नोट तैयार करने की रही है। अपने नोट्स देखकर मुझे लगा कि यह किताब बिजनेस लीडर्स के लिए उपयोगी हो सकती है। ऐसे में प्रीति के सहयोग एवं बखूबी समय प्रबंधन से किताब लिखने का समय निकाल सका।

किताब लिखने का खास मकसद क्या है?
मुख्य मकसद प्रबंधकों और उद्यमियों की जरूरतों को पूरा करना रहा है, ताकि नई पीढ़ी मेरे अनुभवों से सीख सके। हमारे संस्थान को सफलता की उंचाइयों तक ले जाने में इन अनुभवों को परखा गया है।

ऐसे दौर में आपकी किताब वाकई महत्वपूर्ण हो सकती है जब उद्योग और कारोबार जगत में भारी उथल-पुथल चल रही है। स्थापित कारोबारी घराने भी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं। आपकी किताब इस स्थिति से निबटने में कैसे मददगार हो सकती है?
इस सवाल का जवाब दो हिस्सों में दिया जा सकता है। एक, स्थापित घरानों के अच्छा प्रदर्शन न कर पाने का ताल्लुक मौजूदा वैश्विक और देसी आर्थिक माहौल से है। हालांकि इस मामले में दुनिया भर में और भारत सरकार की ओर से भी कई कदम उठाए गए हैं और मेरी राय में सितंबर 2016 के बाद हालात में सुधार दिखने लगेगा। दूसरा, अहम पहलू यह दिख रहा है कि लोग ज्ञान के महत्व को ज्यादा तवज्जो नहीं दे रहे हैं और अपने हुनर का विकास नहीं कर रहे हैं। इसके अलावा, तकनीक के उपयोग पर भी ज्यादा जोर नहीं दिया जा रहा है। नेतृत्व का विकास और उसे निरंतर धारदार बनाते रहना एक बड़ी चुनौती है। मौजूदा हालात में उद्यमी आशंकित हैं। मेरी किताब में ऐसे सभी मुद्दों की विस्तार से चर्चा की गई है और मुझे लगता है कि हर स्तर के उद्यमियों और अगुआ लोगों को इससे काफी मदद मिलेगी।

ई-उद्यमियों और स्टार्ट अप कारोबार पर आपके क्या विचार हैं?
ई-उद्यमियों और स्टार्ट अप कारोबारी संगठित और टिकाऊ मॉडल के बदले फौरी पैसा कमाने में रुचि रख रहे हैं। मेरी किताब खासकर इन मसलों पर चर्चा करती है और तकनीक को विकास के लिए अहम बताती है। मेरी राय में कोई भी तकनीक आधारित कारोबार लंबे समय तक चल सकता है, बशर्ते कारोबार की ठोस योजनाएं हों। ई-कॉमर्स उद्यम स्थापित करने वाले ज्यादातर निजी अंशपूंजी पर निर्भर हैं और मुनाफे के बदले अपने विस्तार पर ध्यान लगाते हैं। अगर उन्हें लगातार रकम मिलती रही, तो लंबे समय में मुनाफा कमा सकते हैं लेकिन पहले 2-3 साल तो उन्हें घाटा ही सहना पड़ सकता है। इसलिए धैर्य के साथ आगे बढ़ना चाहिए और अच्छे परिणाम के लिए अपना सौ प्रतिशत देने का प्रयास करना चाहिए।

क्या आपको लगता है कि अपने रवैये में सुधार लाकर कारोबारी इस माहौल में भी चमत्कार कर सकते हैं?
मेरी राय में मौजूदा माहौल में कंपनियां ढह रही हैं, बहुत सारी तो डूबने के कगार पर है। उन पर कर्ज चढ़ता जा रहा है और चारों ओर निराशा का माहौल है, अच्छे अगुआई करने वालों के लिए अच्छा मौका है। जो आगे बढ़कर साहस और संकल्प के साथ मौका लेने की कोशिश करेगा, वह चमत्कार कर सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

आप कारोबार के लिए सहूलियत का माहौल बनाने के लिए सरकार को क्या सुझाव देना चाहेंगे और कैसी नीतियों की दरकार है?
सरकार ने ऐसे कई कदम उठाए हैं, जिनसे लंबे समय में माहौल सुधरेगा। फिर भी, इस पर विचार करने की दरकार है क्योंकि कारोबारी आशंकित हैं और इसीलिए भारत से बाहर ज्यादा निवेश कर रहे हैं। इसके अलावा 1980 के दशक में हमने प्रतिभाओं का पलायन देखा था और अब संपत्ति तथा उद्यमियों का पलायन हो रहा है। सरकार को उद्यमियों की आशंकाओं को समझकर उनका समाधान करने की दरकार है। नीतियों के मामले में भारी जुर्माने, मुकदमा, छापा वगैरह की जगह स्थापित प्रक्रिया और जवाबदेही की नीतियां लाई जानी चाहिए। न्यायिक व्यवस्था में भी सुधार की जरूरत है।

आपने जब पढ़ाई पूरी की तो अच्छा करियर शुरू करने के लिए आपके दिमाग में क्या चल रहा था?
अपनी किताब में मैंने इस पर जोर दिया है कि हर लीडर के पास अच्छी दूरदृष्टि होनी चाहिए। मेरी पढ़ाई पूरी हुई तो मेरी दृष्टि संकुचित थी। उस समय मैं बस दो-तीन-पांच साल आगे तक की ही सोच पा रहा था। समय बीतने के साथ ज्ञान भी बढ़ा और अनुभव, मेहनत तथा पारदर्शी कामकाज से मुझे अंतरराष्ट्रीय अवसर उपलब्ध हुए, जिससे मुझे

मुफ्त में कुछ नहीं मिलता। कुछ हासिल करने के लिए उसकी कीमत अदा करनी होती है। इसी तरह जीवन में कोई शॉर्टकट नहीं होता। लंबे दौर में ईमानदारी, मेहनत, ज्ञान, निष्ठा, पारदर्शिता ही आपको आगे ले जाती है।

मैं हमेशा विकल्पों को ध्यान में रखता था और कभी अस्वाभाविक-सा लक्ष्य नहीं रखा। इसके अलावा मैं हमेशा अपना ज्ञान बढ़ाने और पारदर्शी बने रहने की कोशिश करता रहा हूं। इसी वजह से मैं लोगों का भरोसा जीतने में कामयाब हो पाया हूं।

राकेश जैन, (चेयरमैन एफएसएल समूह)

लंबी अवधि की दृष्टि कायम करने में मदद मिली।

क्या आप अपने करियर के कुछ खास निर्णायक मौकों के बारे बताना चाहेंगे?
मेरे करियर में लगातार विकास होता रहा है लेकिन कुछ खास मौके ऐसे जरूर आए, जब मुझे लगा कि मुझे अपनी सोच और राह बदलनी चाहिए। करियर के शुरू में (1982-86 के दौर में) मैं बड़े फर्मों से जुड़ा। चार्टर्ड एकाउंटेंट के मेरे करिअर में मैंने पाया कि मेरे दो ग्राहक बड़े बन गए और वे मेरे फर्म से छह बड़े (अब 4 बड़े) फर्मों की ओर चले गए। उस समय मुझे एहसास हुआ कि अगर आप ग्राहकों को बनाए रखना चाहते हैं, तो आपको भी उनके साथ बड़ा होना होगा, वरना आप पीछे छूट जाएंगे। फिर 1987 में मैंने अपने छह दोस्तों के साथ यह फैसला किया कि वित्तीय सेवा और निवेश कंपनी शुरू की जाए। इसके लिए हमने एक कंपनी भी बनाई। जल्दी ही पता लगा कि मेरे दोस्त तो छोड़कर चले गए और कंपनी में मैं अकेला रह गया। उस समय मुझे लगा कि ऐसा कुछ करना चाहिए, जो आपकी अपनी ताकत के बूते खड़ा हो या कोई ठोस मददगार व्यवस्था हो।

दूसरा खास मौका 2000 में आया, जब मेरे एक सहयोगी ने कहा कि एक सॉफ्टवेयर वेंचर में शुरू करो और उसने रूस से एक शुरुआती प्रोजेक्ट मुहैया करा दिया। 2001 में आईटी का बाजार बैठने लगा और वह प्रोजेक्ट भी रुक गया। हमारी कंपनी में 80 पेशेवर लोगों की टीम थी, जो खाली हो गई थी। हम उसके बाद सॉफ्टवेयर उत्पाद बनाने लगे और आज मैं गर्व से कह सकता हूं कि कंपनी 15 साल में सॉफ्टवेयर बाजार में स्थापित हो गई है।

साफ-सुथरे कारोबार के बारे में आपके विचार क्या हैं?
मेरे लिए साफ-सुथरा कारोबार वह है जिसमें पारदर्शिता हो और ईमानदारी तथा निष्ठा जैसे मूल्यों पर आधारित हो।

क्या किसी मौके पर आपको निराशा-हताशा के दौर से गुजरना पड़ा और आप कैसे उस दौर से बाहर निकले?
मेरा सफर अभी तक काफी अच्छा रहा है। ऐसे मौके जरूर आए, जब हम नतीजे न दिखने से तनाव में थे लेकिन मैं कभी हताश नहीं हुआ। पीछे देखता हूं, तो शायद इसकी वजह मेरी व्यवहारिक बुद्धि रही है। मैं हमेशा विकल्पों को ध्यान में रखता था और कभी अस्वाभाविक-सा लक्ष्य नहीं रखा। इसके अलावा मैं हमेशा अपना ज्ञान बढ़ाने और पारदर्शी बने रहने की कोशिश करता रहा हूं। इसी वजह से मैं लोगों का भरोसा जीतने में कामयाब हो पाया हूं।

क्या आप अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और अपने संघर्षों के बारे में कुछ बताना चाहेंगे क्योंकि पाठक आपकी नेतृत्व कला और सफलताओं के बारे में जानना चाहेंगे।
मेरे पिता सरकारी सेवा में थे। मेरी पढ़ाई सरकारी स्कूल में ही हुई, लेकिन बोर्ड में अच्छे अंक आए, तो मेरा दाखिला श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में हो गया और वहीं से मैंने स्नातक की डिग्री हासिल की। मेरे कोई ऐसे बड़े संपर्क नहीं रहे हैं, जिनका हवाला दिया जा सके। मैं पढ़ाई में मेरिट की वजह से एचसीएल समूह में नौकरी पा गया। मैंने एक किराये के घर में मामूली-सी शुरुआत की थी। 1982 में एक अंशकालिक स्टेनो और 2-3 लोगों के स्टाफ के साथ मैंने काम शुरू किया, पर आज हमारी फर्म में 160 प्रोफेशनल हैं। मेरे यहां कोई एक्जिक्यूटिव नहीं है। हर क्यूबिकल में स्वतंत्र प्रबंध निदेशक होता है। मुझे एचसीएल, सैमटेल, यूफ्लेक्स, बाबा ग्रुप, डीएस ग्रुप वगैरह में काम करने से अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ।

आप अपने पारिवारिक और पेशेवर जिंदगी में कैसे तालमेल बैठाते हैं?
मेरी निजी और पेशेवर जिंदगी बढ़िया चल रही है। इसका पूरा श्रेय मेरी पत्नी प्रेरणा को जाता है, जिन्होंने पूरी जिम्मेदारी संभाल ली और मेरी दोनों प्यारी बेटियों को लगभग अकेले ही पाला-पोसा, क्योंकि मैं अपनी पेशेवर जिंदगी में मशगूल रहता रहा हूं। मुझे अब लगता है कि परिवार के साथ कुछ अधिक समय बिताया होता, लेकिन हर किसी को सफलता की कीमत तो चुकानी ही पड़ती है। इसलिए कोई अफसोस नहीं है।

आप युवा उद्यमियों और नौजवानों को क्या प्रेरणा देना चाहेंगे?
मैं युवा उद्यमियों और नौजवानों से कहना चाहूंगा कि मुफ्त में कुछ नहीं मिलता या कुछ हासिल करने के लिए उसकी कीमत अदा करनी होती है। इसी तरह जीवन में कोई शॉर्टकट नहीं होता। लंबे दौर में ईमानदारी, मेहनत, ज्ञान, निष्ठा, पारदर्शिता ही आपको आगे ले जाती है।

आप अपने तमाम संघर्षों से गुजर कर इस जीवन का अंतिम लक्ष्य क्या पाते हैं?
यह अच्छा सवाल है और मैंने अपनी किताब के सातवें अध्याय में इस पर काफी विस्तार से चर्चा की है। कोई भी संगठन अपनी गति से चलता है और उद्यमी का जीवन प्राकृतिक जीवन चक्र के हिसाब से ही आगे बढ़ता है। इसलिए एक संगठन खड़ा करने के बाद किसी लीडर के सामने सवाल होता है कि आगे क्या करना है? मैंने अपनी किताब में लिखा है और मैं यह गहरे से महसूस भी करता हूं कि हमें कुछ अलग तरह का करना है। दूसरे शब्दों में अब उत्तराधिकार तय करने, भूमिकाओं को बदलने, संपत्ति को सहेजने की जरूरत है, ताकि ऐसी पर्याप्त आमदनी होती रहे, जिससे आप जीवन का सुख पा सकें। यानी, परिवार के साथ समय बिता सकें, घूम-फिर सकें, दोस्तों को समय दे सकें और परोपकार कर सकें। मैंने इस अध्याय में जो लिखा है, उसे अबसे करीब 6 साल बाद यानी 65 वर्ष का हो जाने के बाद मैं अपने जीवन में लागू करूंगा।

क्या आप अगली किताब लिखने या इसका दूसरा खंड लिखने की योजना बना रहे हैं?
अभी तो मैं इसी से थक चुका हूं, लेकिन अपने दोस्तों और साथियों की प्रतिक्रिया देखने के बाद एक किताब लिखने का इरादा है। मैं इसके बारे में साल के अंत में फैसला करूंगा।